दिनांक :- 01-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पेपर :- नौ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन तथा प्रथम विश्व युद्ध

चीन में युद्ध विरोधियों की संख्या कम नहीं थी। उनका कहना था कि चीन को जर्मनी से कोई शिकायत नहीं है। केवल एक ही शिकायत कि इसने 1898 ई० में सिंगताओ पर कब्जा किया है। दूसरी ओर 1915 ई० से चीन जापान से उलझा हुआ है। फ्रांस ने उसकी इच्छा के विरुद्ध तिंत्सीन में अपनी बस्ती का विस्तार किया है। इंगलैंड

और रूस से तिब्बत और मंगोलिया के प्रश्न पर भी उसे कोई शिकायत नहीं है। वस्तुतः चीन को मित्र राष्ट्रों से कोई दुश्मनी नहीं थी। सिंगताओ के प्रश्न पर केवल जर्मनी से उसकी अनबन थी।

दूसरी ओर संयुक्त राज्य अमरीका में चीन के पक्ष में वातावरण तैयार होने लगा। युद्ध में शामिल होने पर उसे उसके समर्थन का आश्वासन भी दिया गया। साथ ही, उसकी युद्ध घोषणा के उद्देश्यों चीनी विद्वत् जगत प्रभावित था। इनमें कहा गया था कि वह कमजोर राष्ट्रों के अधिकारों की रक्षा, प्रजातंत्र की सुरक्षा तथा युद्ध द्वारा युद्ध को बंद करने तथा एक आदर्श अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना के लिए युद्ध में शामिल हुआ है। चीनी यह भी जानते थे कि युद्ध की स्थिति में मित्र राष्ट्र और अमरीका चीन की वित्तीय तथा

अन्य रूप से सहायता करेंगे। उन्हे जर्मनी से कोई सहायता मिलने वाली नही है।

किंतु युद्ध में रूस के विरुद्ध एक आंतरिक तर्क भी था। अनेक चीनी यह महसूस करते थे कि युद्ध में भाग लेने की अपेक्षा चीन को अपनी आंतरिक समस्याओं के समाधान में ध्यान देना चाहिए। कोई शक्तिशाली विदेश नीति की अपेक्षा गणतंत्र को मजबूत करने के लिए आंतरिक सुधार और पुनर्गठन के लिए कदम उठाना ज्यादा श्रेयस्कर बतलाया गया। जब कभी हम युद्ध की बात करते है तो सेना के संदर्भ में सोचते है। युद्ध की स्थिति में सैनिक दल का महत्व बढ़ जाएगा जो गणतंत्र के अस्तित्व के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

इसी बीच चीनी प्रधानमंत्री ने तु चुंग (Tuchung)

Scanned with CamScanner

मे एक सम्मेलन बुलाया। यहां मंचू राजवंश के पुनस्थापन, पीकिंग को सैनिकवादियों के नियंत्रण में रखने आदि के बारे में विचार-विमर्श किया गया अब सैनिकवादियों से विचार विचार विमर्श करने पर बल दिया गया। इस समय तुवान ची-गु प्रधान मंत्री था किंतु राष्ट्रपति फेंग कुओचांग (Feng Kuochi नया था। युद्ध प्रश्न पर विचार किया गया तथा 14 अगस्त 1917 ई० को युद्ध की घोषणा कर दी गई।

युद्ध मे सहभागिता के तात्कालिक परिणाम

चीन युद्ध में शामिल हो गया। इसके तात्कालिक परिणाम उल्लेखनीय है।

प्रथम इसके सीमा-शुल्कों का पुनर्संशोधन किया गया। पहले ढाई प्रतिशत सीमा शुल्क लिया जाता था अब पांच प्रतिशत कर दिया गया।

Scanned with CamScanner

द्वितीय मार्च से केंद्रीय शक्तियों से कूटनीतिक संबंध विच्छेद कर तथा अगस्त में युद्ध की घोषणा करके चीन ने अनेक संधि-बंदरगाहों, जैसे तिंत्सीन में जर्मन एवं आस्ट्रियाई आवासीय इलाकों पर पुनर्नियंत्रण कर लिया। यहाँ उन्हें अनन्य सुविधाएँ दी गई थी। उनकी सार्वजनिक एवं निजी संपत्ति ले ली गई या अलग रख दी गई जिसका निपटारा युद्ध के बाद करना था। तृतीय मित्र राज्यों ने इस बात पर सहमति प्रकट की कि चीन को बॉक्सर विद्रोह के तहत जर्मनी और आस्ट्रिया को दी जाने वाली क्षतिपूर्ति का भुगतान नहीं करना है तथा पांच वर्षों के लिए मित्र राष्ट्रों का भुगतान भी स्थगित कर दिया गया। चतुर्थ चीन को यह आश्वासन दिया गया कि शांति-सम्मेलन में उसे आमंत्रित किया जाएगा तथा

Scanned with CamScanner

जापान की भांति बराबरी का दर्जा दिया जायेगा।
प्रथम विश्वयुद्ध मे चीन की सहभागिता से मित्र
राष्ट्रो को ठोस लाभ हुए वे पहले से ही वहाँ से
मजदूरो की भर्ती आपूर्ति का लाभ उठा रहे थे,
अब उनकी यह सुविधा और भी बढ़ गई। मज
दूरो की भर्ती, उनका प्रशिक्षण और उन्हे फ्रांस भेजा
जाने लगा। यद्यपि चीन ने पश्चिम मे कोई सेना
नही भेजी न तो इसने मित्र राष्ट्रो के साइबेरियाई
मोर्चे मे कोई भाग लिया तथापि फ्रांस मे इसके
मजदूरो ने सेना मे दूसरी रक्षा पंक्ति का काम किया
मित्र राष्ट्रो ने उनकी सेवाओ की बड़ी प्रशंसा की है
पुनः चीन ने मित्र और सहयोगी शक्तियो को ठोस
सामग्रीयो देने का वचन दिया यद्यपि उसके पास
खाद्यान्न या कच्चे मालो का अभाव था, तथापि

इसी मे कुछ बचाकर उन्हे देने के लिए तैयार था
औद्योगिक उपायकता के बारे में भी यही बात
थी यह कच्चे लोहे की भी आपूर्ति कर सकता था
लेकिन खदानो से लोहे निकालने के लिए आवश्यक
पूंजी का अभाव था उसके मित्र भी पूंजी और मशीन
की आपूर्ति नही कर पाए इसके लिए संयुक्त राज्य
चीन था क्योंकि वही उसकी सारी आवश्यकताओ
की पूर्ति कर सकता था। यद्यपि संयुक्त राज्य के
राजदूत ने उसे वित्तीय सहायता देने का वचन दिया
था। तथापि अपनी सरकार से वह कुछ नही दिला सका
फलतः चीन को विवश होकर जापान के आगे हाथ
पसारना पड़ा। जापान उसे किसी खास बिंदु तक अपने
लाभ के लिए वित्तीय सहायता दे सकता था।
युद्ध में चीन की सहभागिता का एक तीसरा लाभ था।

Scanned with CamScanner